Awareness Programme for Small Tea Growers on PPC

जागरण

खुदरा चाय किसानों को लेकर कार्यशाला

जलपाईगुड़ी : खुदरा चाय कृषकों द्वारा चाय बागानों में कीटनाशक का काफी मात्रा में प्रयोग किया जा रहा है, जिससे चाय की गुणवत्ता नष्ट हो रही है। यही कारण है भारतीय चाय पर्षद ने खुदरा चाय कृषकों को टी बोर्ड के निर्देशानुसार कीटनाशक व्यवहार करने के क्षेत्र में प्लैंट प्रोटेकशन कोड व पीपीसी में शामिल कीटनाशक का ही उपयोग करने का परामर्श दिया है। बुधवार भारतीय चाय पर्षद की ओर से खुदरा चाय कृषकों को लेकर जलपाईगुड़ी टी अक्शन सेंटर में एक कार्यशाला का आयोजन किया गया था। संस्था के डेपूटी डिरेक्टर रामेश्वर कुजूर ने बताया कि ज्यादातर खुदरा चाय कृषकों द्वारा टी बोर्ड में शामिल कीटनाशक का प्रयोग नहीं कर अन्य कीटनाशक का प्रयोग किया जा रहा है, जो स्वास्थ्य के क्षेत्र में काफी हानिकारक है। कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य चाय कृषकों को जागरूक करना है। चाय बागानों में ऐसे कीटनाशक का प्रयोग न किया जाए जो लोगों के लिए हानिकारक हो। इस दौरान कृषकों को चाय पत्तियों की गुणवत्ता बढ़ाने व स्वास्थ्य लाभ संबंधी चाय की खेती करने की महत्वपूर्ण जानकारी दी गई। साथ ही कितनी मात्रा में कीटनाशक का प्रयोग हो, इन विषयों से भी कृषकों को अवगत कराया गया। अगर इसके बाद भी कोई पीपीसी कोड के बाहर वाले कीटनाशक का व्यवहार करते हैं तो उनके चाय पत्तियों के बेचने पर पाबंदी लगा दी जाएगी। इतना नही उनके बागानों का लाइसेंस रद्द कर दिया जाएगा। उक्त कार्यशाला में जलपाईगुड़ी जिले के विभिन्न इलाके के खुदरा चाय कृषकों ने हिस्सा लिया।

Tea Board conducted Awareness Programme on Plant Protection Code for the STGs of North Bengal

Jalpaiguri 20 October: Tea Board of India conducted an Awareness Programme on Plant Protection Code (PPC) for the Small Tea Growerss of North Bengal on 19th October at ITPA hall, Jalpaiguri. The programme was organized by Tea Board Jalpaiguri office in association.

Mr. R. Kujur, Dy. Director of Tea Development, Siliguri welcomed the participants and briefed on the objectives of the workshop.

Dr. A. Basu Majumder, Research Officer, Tea Board elaborately discussed on various aspects of Plant Protection Code, its aim and objectives, various provisions for its implementation etc. Discussions were also made on major insect pests, diseases and weeds of tea, detailed strategies on their integrated management, do's and don'ts for pesticide spraying etc. A note in Bengali was also circulated amongst participants on the discussions made there.

The President of CISTA, Mr. Bijoy Gopal Chakravarty congratulated Tea Board for such initiative in providing technical support on usage of pesticides in tea. He told that such workshop in regional language will not only help growers in producing quality green leaves but also enable to reduce cost of agro inputs by correct choice of pesticides.

Among the others, Mr. Rajat Kr. RayKarji, Chairman, United Forum of Small Tea Growers Association, North Bengal and Mr. Ranjit Ganguly, President, Uttar banga Khudra Prantik Cha Chashi Samiti were present in the workshop. Mr. Sinha Babu, Secretary, DBITA and Mr. R. A. Sharma, Secretary, Dooars Br. of TAI were also attended the programme.

More than 80 STGs from various Self Help Groups of Small Tea Growers of North Bengal participated in the workshop.

উত্তরের সারাদিন

২০ অক্টোবর ২০১৬, বৃহস্পতিবার

পিপিসির নথিভুক্ত কীটনাশক ব্যবহারের পরামর্শ ভারতীয় চা পর্ষদ

জলপাইগুড়ি ক্ষুদ্র চা চাষিদের প্লান্ট প্রোটেকশন কোড নিয়ে সচেতনতা কর্মসূচি। ছবি-কমল রায়

জলপাইগুড়ি, ১৯ অক্টোবর: ক্ষুদ্র চা চাষীরা চা বাগানে যথেচ্ছভাবে কীটনাশক ব্যবহার করছেন। তাতে চায়ের গুণগত মান নষ্ট হচ্ছে। ক্ষুদ্র চা বাগানে কীটনাশক ব্যবহারের ক্ষেত্রে টি বোর্ডের নির্দেশিকা অনুযায়ী প্ল্যান্ট প্রোটেকশন কোডের পিপিসির নথিভুক্ত কীটনাশক গুলিই ব্যবহার করার জন্য ক্ষুদ্র চা চাষীদের পরামর্শ দিল ভারতীয় চা পর্ষদ।

জলপাইগুড়ি টি অকশন সেন্টারে এদিন ক্ষুদ্র চাষীদের নিয়ে এক কর্মশালার আয়োজন করে ভারতীয় চা পর্ষদ। ভারতীয় চা পর্ষদের ডেপুটি ডিরেক্টর রাশ্বের কুজুর জানান আমরা লক্ষ করছি, বেশির ভাগ ক্ষুদ্র চা বাগানে টি বোর্ডের উল্লিখিত কীটনাশক ব্যবহার না করে অন্য কীটনাশক ব্যবহার করছেন চা চাষীরা। যা স্বাস্থ্যের পক্ষে হানিকারক। আমরা চাই চা পান করে কারও কোনও স্বাস্থ্যের ক্ষতি না হয়। তাই স্বাস্থ্য সম্মত চায়ের ওপর চা পর্ষদ জোর দিচ্ছে। সেই কারণেই জলপাইগুড়ি জেলার ক্ষুদ্র চা চাষীদের নিয়ে বুধবার কর্মশালার আয়োজন করা হয়েছিল তাদের চায়ের গুণগত মান কিভাবে বাড়ানো যায় এবং স্বাস্থ্যসম্মত চা কিভাবে তৈরি করা যায়। আমরা লক্ষ্য রাখছি পিপিসি কোডের বাইরে যদি কেউ চা কিভাবে তৈরি করা যায়। পিপিসি কোডের বাইরে যদি কেউ চা বাগানে কীটনাশক ব্যবহার করেন তাহলে তার চা পাতা বিক্রি করা আমরা বন্ধ করে দেব এমনকি লাইসেন্সও বাতিল করে দেব। আমরা এই জন্যই কত পরিমান কোন কীটনাশক কিভাবে দিতে হবে তাও চা চাষীদের অবগত করছি। এদিনের সেমিনারে জলপাইগুড়ি জেলার বিভিন্ন এলাকা থেকে চা চাষীরা ভারতীয় চা পর্ষদের কর্মশালায় অংশ নেয়।

উত্তরবঙ্গ সংবাদ ২০ অক্টোবর ২০১৬ নয়

সেমিনার

জলপাইগুড়ি, ১৯ অক্টোবর : জলপাইগুড়ি চা নিলামকেন্দ্রে বুধবার ক্ষুদ্র চা চাষিদের নিয়ে সেমিনার করল চা পর্ষদ। সুসংহত উপায়ে সার ও কীটনাশক ব্যবহারের উপরে আলোচনা করেন টি বোর্ডের ডেপুটি ডিরেক্টর রমেশ কুজুর এবং বিজ্ঞানী অনির্বান বসুমজুমদার।

গণশক্তি

October 20, «2016»

স্বাস্থ্যসম্মত চা উৎপাদনের পরামর্শ ক্ষুদ্র চা চাষিদের

নিজস্ব সংবাদদাতা : জলপাইগুড়ি, ১৯শে অক্টোবর – চা বাগানে যথেচ্ছভাবে কীটনাশক ব্যবহার করায় চায়ের গুণগত মান খারাপ হচ্ছে। ভারতীয় চা পর্ষদের নির্দেশিকা মেনে প্ল্যান্ট প্রোটেকশন কোড বা পি পি সি-র নথিভুক্ত কীটনাশকগুলি ব্যবহার করার জন্য ক্ষুদ্র চা চাষিদের পরামর্শ দেওয়া হয়েছে।

বুধবার জলপাইগুড়ি ক্ষুদ্র চা চাষিদের নিয়ে একটি কর্মশালা হয়। চা পর্ষদের ডেপুটি ডিরেক্টর রামেশ্বর কুজুর জানান, বেশিরভাগ ক্ষুদ্র চা বাগানে পর্ষদ উল্লিখিত কীটনাশক ব্যবহার হচ্ছে না। ফলে চায়ের গুণগত মন খারাপ হচ্ছে। এমনকি ওই চা খেলে শারীরিক ক্ষতিও হচ্ছে। সেইজন্য স্বাস্থ্যসম্মত চা উৎপাদনে পর্ষদ নজর দিয়েছে। চায়ের গুণগত মান বাড়িয়ে স্বাস্থ্যসম্মত চা তৈরির পরামর্শ দেওয়া হচ্ছে ক্ষুদ্র চা চাষিদের।

प्रभात खबर

सिलीगुड़ी, गुरुवार 20.10.2016 03

छोटे चाय बागान कर रहे कीटनाशक का मनमाना इस्तेमाल

■ **टी बोर्ड के उप-निदेशक ने दी चेतावनी**

जलपाईगुड़ी. छोटे चाय किसान अपने बागानों में जिस तरह कीटनाशक का इस्तेमाल कर रहे हैं, उससे चाय की गुणवत्ता नष्ट हो रही है. इंडियन टी बोर्ड ने छोटे चाय उत्पादकों को बोर्ड की निर्देशिका के मुताबिक प्लांट प्रोटेक्शन कोड (पीपीसी) के तहत आनेवाले कीटनाशकों का ही इस्तेमाल करने की सलाह दी.

जलपाईगुड़ी के चाय नीलामी केंद्र में बुधवार को छोटे चाय किसानों के लिए टी बोर्ड की ओर से एक वर्कशॉप आयोजित किया गया था. इसमें बोर्ड के उप-निदेशक रामेश्वर कुजुर ने कहा कि हमें देखने को मिल रहा है कि छोटे बागान बोर्ड द्वारा तय कीटनाशकों का प्रयोग न करके, दूसरे कीटनाशकों का प्रयोग कर रहे हैं. ये मानव स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हो सकता है. हम चाहते हैं कि जो लोग चाय पीते हैं, उनके स्वास्थ्य को कोई नुकसान न हो. कीटनाशकों का प्रयोग स्वास्थ्य को ध्यान में रखकर हो, इसीलिए इस वर्कशॉप का आयोजन किया गया है. उन्होंने कहा कि यदि कोई पीपीसी के बाहर के कीटनाशकों का इस्तेमाल करता है, तो इस बारे में जानकारी मिलने पर उसके कच्चे पत्तों की खरीद बंद कर दी जायेगी. साथ ही उसका लाइसेंस भी रद्द कर दिया जायेगा. कौन सा कीटनाशक किस मात्रा में प्रयोग करना है, यह जानकारी हम चाय किसानों को दे रहे हैं. इस वर्कशाप में जिले के विभिन्न इलाकों से छोटे चाय किसान शामिल हुए.